Year-6 Volume: II, April-June, 2024 Issue-22 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

6. प्रवासी सिनेमा: डायस्पोरिक समाज की अभिव्यक्ति

डॉ. रिन्जु राय
वरिष्ठ लेखिका, प्रवासी सिनेमा
राजस्थान
ईमेल : rinjurai1975@gmail.com

सारांश

प्रवासी सिनेमा, डायस्पोरिक भारतीयों के जीवन, अनुभवों और संघर्षों को चित्रित करने वाला एक विशिष्ट सिनेमाई शैली है। यह सिनेमा, विभिन्न संस्कृतियों के बीच तालमेल, पहचान की खोज, और मूल देश से जुड़ाव जैसे विषयों पर प्रकाश डालता है। इक्कीसवीं सदी में, प्रवासी सिनेमा एक महत्वपूर्ण सिनेमाई आंदोलन बनकर उभरा है। यह सिनेमा, विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रवासी भारतीयों के जीवन को प्रस्तुत करता है, और सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दों पर चर्चा को प्रोत्साहित करता है। प्रवासी सिनेमा का संबंध प्रवासी लोगों पर फिल्मांकन किए गए सिनेमा से है। इन फिल्मों में देशज संस्कृति और अस्मिता पर आधारित अभिव्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है। इस सिनेमा की विशेषता अथवा सुंदरता, सिनेमा का स्वरूप, सौंदर्यशास्त्र और मूल देश से इसका जुड़ाव होता है। इक्कीसवीं सदी के सिनेमा में कई संविमर्श धाराएँ प्रचलित हैं। इनमें स्त्री विमर्श, दलित विमर्श की भांति इधर प्रवासी विमर्श ने भी जगह बनाई है। प्रवासी विमर्श की विशेषता यह है कि इसके अंतर्गत रचनात्मक सिनेमा को अधिक दृश्यांकित किया गया है। आशय यह है कि प्रवासी सिनेमा डायस्पोरिक समाज की अभिव्यक्तियों को कह पाने में सक्षम है।

मुख्य शब्द: डायस्पोरा, प्रवासी, सिनेमा, पहचान, संस्कृति

प्रस्तावना:

आज के वैश्वीकृत युग में, प्रवासी भारतीयों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। विभिन्न देशों में बसे ये भारतीय, अपनी जड़ों से जुड़े रहने और अपनी संस्कृति को जीवित रखने का प्रयास करते हैं। प्रवासी सिनेमा, इस प्रयास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह सिनेमा, डायस्पोरिक भारतीयों की कहानियों को दर्शकों तक पहुंचाता है, और उनकी भावनाओं, विचारों और अनुभवों को व्यक्त करता है। प्रवासी सिनेमा, विभिन्न संस्कृतियों के बीच समझ और सहिष्णुता को बढ़ावा देने में भी योगदान देता है। आज के संदर्भ में भारतीय डायस्पोरा विश्व अपने मूल देश की सामाजिक-सांस्कृतिक धरोहर को नयी पीढ़ी को स्थानांतरित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्षों से विदेशों में बसे भारतवंशी समुदाय अपनी जड़ों से जुड़े रहने के लिए एकजुट होने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं। इन्हें ही डायस्पोरा कहा जाता है।

The Asian Thinker

Year-6 Volume: II, April-June, 2024 Issue-22 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

ये भारतीय मूल के लोग, जिनकी मातृभाषाएँ भिन्न-भिन्न हैं, सामाजिक और धार्मिक मान्यताएँ भी भिन्न भिन्न हैं, परंतु ये सभी भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति सचेत और आस्थावान हैं। इनकी बोली तथा भाषाएँ भी आपस में भिन्न-भिन्न हैं। ये अलग-अलग तरह के काम करते हैं, मगर फिर भी जो सूत्र उन्हें जोड़ता है, वह उनका भारतीय मूल, भारतीय संस्कृति के प्रति उनका प्यार और भारत से उनका गहरा आत्मीय लगाव है। यह हिंदी डायस्पोरिक सिनेमा में स्पष्ट देखने को मिलता है।

डायस्पोरिक सिनेमा : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

डायस्पोरा का शाब्दिक अर्थ अपने देश की धरती से दूर विदेश में बस जाना, अर्थात 'प्रवासन' होता है। इसके मूल में विदेश में रहते हुए भी अपने स्वदेश की सामाजिक सांस्कृतिक-परंपराओं को निभाते रहना शामिल है। डायस्पोरिक सिनेमा का संबंध प्रवासी भारतीयों के जीवन पर आधारित कथा-वस्तुओं पर निर्मित सिनेमा से है। इन फिल्मों में विदेशों में निवास कर रहे भारतीयों द्वारा अपनाई गई विदेशी संस्कृति और सामाजिकता के परिप्रेक्ष्य में उन लोगों का भारत के प्रति प्रेम और समर्पण के तत्वों को खोजने का प्रयास किया गया है। डायस्पोरिक सिनेमा प्रवासी भारतीयों की मानसिकता का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। प्रवासी भारतीयों द्वारा अपनी सांस्कृतिक जड़ों को खोजने का प्रयास इन फिल्मों में सार्थक रूप से दिखाई देता है।

मुख्यधारा की हिंदी फिल्मों में जब विषयवस्तु, गीत- संगीत और पात्र अभिनय के आधार पर प्रवासी भारतीयों का जीवन और पृष्ठभूमि शामिल किया जाता है, तो ऐसी फिल्मों को हिंदी डायस्पोरिक सिनेमा कहा जा सकता है। इन फिल्मों का मूल उद्देश्य प्रवासियों को अपने मूल देश की जड़ों से जोड़ना भी है।

नई और संकर जातीयताओं का गठन, डायस्पोरा समाजों के सांस्कृतिक और सामाजिक प्रथाओं को बाधित करते हैं। वे पश्चिमी आधुनिकता और राष्ट्रवाद, विशेष रूप से नागरिकता से संबंधित नस्लीय निर्माण के बारे में स्वीकार्य विचारों का भी चुनाव करते हैं। प्रवासी सिनेमा औपनिवेशिक तथा प्रवासी समाज द्वारा निर्मित की जाती हैं। ऑक्सफोर्ड शब्दकोश के अनुसार- 'पश्चिम में रहने वाले औपनिवेशिक, निर्वासित, या प्रवासी व्यक्तियों द्वारा बनाई गई फिल्में, और उनके वंशजों द्वारा बनाई गई फिल्म डायस्पोरिक फिल्म कहलाती है।

भारतीय दर्शकों को विशेष फिल्म देने वाले ये निर्माता-निर्देशक और अभिनेता विश्व सिनेमा से काफी प्रभावित रहे हैं। 'देव डी', 'गुलाल', 'ब्लैक फ्राइडे' और 'नो स्मोकिंग' जैसी फिल्मों के निर्देशक अनुराग कश्यप को फिल्में बनाने की प्रेरणा विश्व सिनेमा से ही मिली।

प्रवासी सिनेमा का स्वरूप वैविधतापूर्ण है। इसे प्रवासियों की श्रेणियों के वर्गीकरण के आधार पर विश्लेषित किया जा सकता है। प्रवासी समुदायों को तीन प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता हैं-

1. प्रथम श्रेणी में वे लोग हैं, जो गिरमिटिया मजदूरों के रूप में फिजी, मॉरीशस, त्रिनिडाड, गुआना, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में भेजे गए थे।

Year-6 Volume: II, April-June, 2024 Issue-22 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

2. द्वितीय श्रेणी में आठ के दशक में यूरोपीय देशों में गए अशिक्षित-अर्द्धशिक्षित, कुशल अथवा अर्द्धकुशल मजदूर आते हैं।
3. तृतीय श्रेणी में वर्ष 80-90 के आस-पास गए सुशिक्षित मध्यवर्गीय लोग हैं, जिन्होंने अच्छे भौतिक जीवन के लिए प्रवास किया।

इन तीन तरह की श्रेणियों में से, सिनेमा के वर्तमान समय में, अंतिम श्रेणी का ही प्रभुत्व दिखाई देता है। गिरमिटिया मजदूरों की बाद की पीढ़ियों में से अधिकांश ने रोजगार तथा अन्य कारणों से हिंदी या भोजपुरी के अलावा दूसरी अंतरराष्ट्रीय भाषाओं को अपना लिया। फ़िजी के विमल रेड्डी एक ऐसे निर्देशक हैं, जिनको उल्लेखनीय माना जाता है। इनकी फिल्म अधूरा सपना, घर परदेस, हाइवे टू सूवा ने काफी प्रशंसा पाई है। फिजी, त्रिनिडाड, अफ्रीका अथवा गुआना से कोई ऐसा लेखक और निर्देशक नहीं हुआ जिसको प्रवासी लेखन एवं दृश्यांकन में अधिक ख्याति प्राप्त हुई हो।

हिंदी प्रवासी सिनेमा के दो वर्ग है -

- एक वह जो प्रवासी निर्देशकों एवं कलाकारों द्वारा बनाई गयीं,
- दूसरी वे जो देश में देश के निर्माता, निर्देशक द्वारा बनाई गयी हैं।

इन दो वर्गों के फिल्मांकन को ही हिंदी प्रवासी सिनेमा की संज्ञा दी गई है। वस्तुत: पराए देशों में पराए होने की अनुभूति और उस अपरिचित परिवेश में समायोजन के प्रयास, सफलताएं और असफलताओं को ही प्रवासी सिनेमा का आधार माना जा सकता है इन तीनों ही चरणों में, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियों का चित्रण होता है।' खान-पान,वेश–भूषा , बोली-भाषा, पर्व-त्योहार का भी उल्लेख किया जाता है, परंतु रीति-रिवाज, संस्कृति तथा रहन-सहन इस विमर्श की प्रधान विधा मानी गयी है।

डायस्पोरिक सिनेमा का फलक काफी विस्तृत है। यह प्रत्येक प्रवासी समुदाय के दु:ख, संघर्ष, पीड़ा, लगन, मेहनत और विजय की अंतर्गाथा का सचित्र दस्तावेज है। प्रवासी सिनेमा में अपने देश के सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं को चित्रित करने का प्रयास किया जाता है। मीरा नायर की 'नेमसेक' जहां बंगाली समुदाय की पहचान संकट को वैश्विक स्तर पर दिखाती है, वहीं मनमोहन सिंह की फिल्म 'असां नू मान वतनां दा' पंजाबी डायस्पोरा पर आधारित कहानी है। इस फिल्म में एक प्रवासित व्यक्ति वापस स्वदेश में लौटकर बसना चाहता है तब उसे किस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है इस कहानी को दिखाया गया है। इसके अलावा 'बेंड इट लाइक बेकहम', 'मानसून वेडिंग', 'अधूरा सपना' अलग-अलग तरह की प्रवासियों की समस्या को उजागर करती है।

विमल रेड्डी फिजी में रह रहे भारतीय डायस्पोरा की समस्याओं पर केन्द्रित सिनेमा बनाने के लिए जाने जाते हैं। इनके द्वारा निर्मित 'अधूरा सपना', 'घर-परदेश' और 'हाईवे टू सूवा' फिजी में रह रहे प्रवासी भारतीयों की अभिव्यक्ति

Year-6 Volume: II, April-June, 2024 Issue-22 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

है। ईश अमितोज की 'कंदबी कलाई' डायस्पोरिक समुदाय पर आधारित एक चर्चित फिल्म है। इस फिल्म में सिख डायस्पोरा की समस्याओं को उजागर किया गया है।

रेखा शर्मा ने 'अमेरिकन देसी' फिल्म का विश्लेषण कर दक्षिण एशियाई प्रतिनिधित्व को फिल्मों के माध्यम से देखने का प्रयास किया है। सृजा सान्याल ने 'नेमसेक' में यह परीक्षण किया कि एक स्त्री प्रवासित होने पर किस प्रकार की समस्याओं का सामना करती है। सुब्रता दास ने बंगाली डायस्पोरा की समस्याओं को 'नेमसेक' फिल्म को आधार बनाकर देखा। इसी प्रकार करीम एच करीम ऐथेनिक मीडिया पर विमर्श प्रस्तुत करते हैं।

भारत में बनी प्रवासी फिल्मों मे 'नमस्ते लंदन, 'पूरब और पश्चिम','तमस', 'ट्रेन टू पाकिस्तान' प्रमुख है। शोएब मंसूर की निर्देशित 'खुदा के लिए' अमेरिका और ब्रिटेन में रह रहे प्रवासी पाकिस्तानियों के पहचान के संकट को अभिव्यक्त करती है। यह फिल्म खास तौर पर अमेरिका पाकिस्तान और अफगानिस्तान के प्रति दृष्टिकोण और उसके आम नागरिकों पर पड़ने वाले प्रभावों को दर्शाती है।

प्रवासी सिनेमा विधा की शुरुआत कोई बहुत पुरानी नहीं है। मीरा नायर, दीपा मेहता, गुरिंदर चड्डा की फिल्में पिछले कुछ वर्षों से ही चर्चा में आयी हैं। ऐसे सैकड़ों लेखक, निर्माता, निर्देशक हैं, जिनके पास कोई बात, कोई विचार है जो उसे दृश्य के माध्यम से बात कहने को आकृष्ट करता है, बिना बाजार के बाजार में उतरने की सलाह देता है। ऐसी सिनेमा जिसमें मूल देश का कथानक उसी की बोली-भाषा में प्रस्तुत किया जाता है तथा सत्य चित्रण पर जोर दिया जाता है, प्रवासी सिनेमा कहलाता है। प्रवासन सिनेमा के पर्दे पर तीन प्रमुख बिन्दुओं के रूप में प्रकट होता है- निर्माण, प्रस्तुतिकरण और अंतर्ग्रहण के रूप में।

इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक में कई ऐसी फिल्म बनीं, जिनमें आधार और स्वरूप डायस्पोरिक सिनेमा निर्माता और निर्देशक ने भारतीय समाज की आंतरिक संवेदना के सांस्कृवतिक अंतरक्रियाओं एवं संघर्ष को दिखाने का प्रयत्न किया और उसमें बहुत हद तक सफल भी रहे। ये सारी फिल्म भारतेतर जीवन श्रृंखला को बताने और बनाने में सफल रहीं। इन फिल्मों में डायस्पोरिक सिनेमा की खुशबू ही नहीं बल्कि उनका समाज भी दृश्यांकित हुआ, जिनमें 'कहो न प्यार है' (2000), 'कभी खुशी कभी गम'(2001), 'यादें' (2001) 'मुझसे दोस्ती करोगे' (2002), 'चलते-चलते'(2003), 'हम तुम'(2004), 'सलाम नमस्ते्' (2005), 'कभी अलविदा न कहना' (2006), 'नमस्ते लंदन', 'हे बेबी' (2007), 'सिंह इज किंग', 'दोस्ताना' (2008), 'लव आज कल' (2009) जैसी फिल्म प्रमुख रही हैं।

इन फिल्मों के माध्यम से भारतीय डायस्पोरिक समाज को भारतीय संस्कृति के रीति-रिवाजों एवं यहाँ की सामाजिक-सांस्कृतिक तस्वीरों को प्रवासी भारतीयों के मन-मस्तिष्क में उतारने का प्रयास किया जाता है। 'डायस्पो रिक सिनेमा में लोकप्रिय संस्कृयति, मीडिया और मनोरंजन उद्योग के मुद्दों को एक नया परिप्रेक्ष्य' प्रदान करता है। यह 'वीर जारा', 'झूम बराबर झूम' और 'दोस्ताना' के रूप में समकालीन फिल्मोंक की एक श्रृंखला की चर्चा करता है। इन फिल्मों

Year-6 Volume: II, April-June, 2024 Issue-22 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

के द्वारा देशज संस्कृति को प्रवासी भारतीयों के मध्य विवेचन के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को विश्लेषित किया है। ‘प्रति वर्ष लगभग आठ सौ फिल्मों का निर्माण करने के साथ आधुनिक भारत को सिनेमा का मंदिर कहा जाता है। इसमें सौंदर्य के सिद्धांतों, वैश्विक फिल्म उद्योग, फिल्म सिद्धांत, राष्ट्रीय पहचान, लोकप्रिय संस्कृति और सिनेमा के इतिहास के व्यापक मुद्दों को ‘मदर इंडिया’ (1957), ‘देवदास’ (1935), ‘रामलखन’ (1989) और ‘खलनायक’ (1993) सहित हाल की प्रवासी भारतीयों से सम्बंधित फिल्मों को डायस्पोरिक निहितार्थ देखा जा सकता है।

महत्त्वपूर्ण डायस्पोरिक फिल्मों में प्रवासी समाज

पूरब और पश्चिम (1970) फिल्म के निर्माता एवं मनोज कुमार ने भारतीय नगरीय-ग्रामीण परिदृश्य और भारत से पलायन कर विदेश गए लोगों के सामाजिक स्वरूप को चित्रित किया है। फिल्म में जीवन के विभिन्न संबंधों और रहन-सहन के परिवेश को बखूबी दिखाया गया है। डायस्पोरिक समाज पर केन्द्रित फिल्म का उद्देश्य अपने मूल देश के रहन-सहन तथा पाश्चात्य यानि प्रवासन देश के रहन-सहन, खान-पान बोली को उल्लेखित करना है। फिल्म में अपने ही देश को भूल कर विदेशी सभ्यता व संस्कृति के रंग में रंगे तथा स्वदेश को तिरस्कार की भावना से देखने वाले प्रवासी भारतीयों की कहानी प्रस्तुत कर निर्देशक निर्माता ने सत्ता, विलासिता और धन के लोभ में फंसे भारतीय युवा प्रवासियों की मानसिकता का चित्रण किया है। भारत से विदेश गए युवाओं में अपने मूल देश के प्रति उपेक्षा को इस फिल्म में बखूबी दिखाया गया। पश्चिम देश की संस्कृति और समाज के अंतर्गत वहाँ रहन-सहन पद्धति, खान-पान, विलासिता की संस्कृति तथा मन की स्वच्छंदता भारतीय प्रवासियों में गैर-संस्कारिक माहौल को दिखाते हैं। पश्चिम की संस्कृति एक ऐसी संस्कृति है जहां बेटी माँ-बाप का आदर नहीं करती बल्कि साथ में बैठकर सिगरेट और एल्कोहल पीती है। पश्चिम में धन की अधिकता के कारण विलासिता में युवा फंस जाते हैं ओंकार के रूप में गलत संगति के युवा को भी बखूबी चित्रित किया गया है। फिल्म अपने नाम पूरब और पश्चिम शीर्षक को सांस्कृतिक-सामाजिक रूप को बखूबी चित्रित करती है। फिल्म अपने मूल संदेश को लोगों के बीच रख पाने में बखूबी सक्षम है।

यश चोपड़ा निर्देशित फिल्म फिल्म ‘दिलवाले दुल्हनियाँ ले जायेंगे’ वर्ष 1995 में बनी हिंदी भाषा की फिल्म है। फिल्म में चौधरी बलदेव सिंह, ब्रिटिश अप्रवासी है। वह अपनी बीवी लाजवंती और दो बेटियाँ, सिमरन और चुटकी के साथ लंदन में रहते हैं। इतने वर्ष लंदन में रहने के बावजूद वे भारतीय संस्कृति और संस्कार में विश्वास रखते हैं और अपने बच्चों को भी वही तालीम देते हैं उनका मानना है कि वह सिर्फ़ पैसा कमाने के लिए लंदन में है और एक दिन वापस अपने देश भारत (पंजाब) लौट जाएँगे।

फिल्म विदेशी प्रभाव और भारतीय संस्कृति के बीच में संतुलन का संदेश देती है। जहाँ एक तरह राज और सिमरन विदेश में पले बड़े हुये हैं वही दूसरी तरफ राज सिमरन को भागने से मना कर देता है और बड़ों के आशीर्वाद और मंज़ूरी से ही सिमरन से शादी करना चाहता है। ‘घर आजा परदेसी…’ जहाँ अप्रवासी भारतीय को वापस बुलाती है वहीं ‘मेरे ख्वाबों

में आए...' सिमरन के सपनों के राजकुमार का वर्णन करता है। 'हो गया है तुझको तो प्यार सजना...' सिमरन और राज के अज्ञात प्यार की भावनाएं दर्शाता है।

सुभाष घई द्वारा निर्देशित फिल्म 'परदेस (1997)' की कहानी अभिनेता अर्जुन और गंगा है। फिल्म में विषय सौंदर्य और अक्सर पश्चिमी संस्कृति और मूल्यों के कथित वांछनीयता से अभिभूत हैं जो भारतीय संस्कृति और मूल्यों की पात्रता है। किशोरीलाल एक सफल उद्योगपति है जो अमेरिका में बस चुके हैं लेकिन दिल से वे अभी भी भारत से जुड़े होते हैं। वह अपने बेटे राजीव जो खुद पूरी तरह पश्चिमी सभ्यता-संस्कृति से है, की शादी एक शिक्षित, गुणी और संस्कारी भारतीय लड़की से करना चाहता था ताकि उसका बेटा भारतीय संस्कृति को जान सके। वह अपने पुराने बचपन के दोस्त सूरज देव की बेटी गंगा का अपने बेटे से विवाह करना चाहता है क्योंकि भारतीय संस्कार वह जीवित रखना चाहता है।
संजय लीला भंसाली द्वारा निर्देशित फिल्म 'कभी खुशी कभी ग़म' वर्ष 2001 में बनी हिंदी प्रवासी फिल्म है। यशवर्धन रायचंद शहर का अमीर, नामी व्यक्ति है जिसके दो बेटे हैं- राहुल और रोहन। राहुल को यश और उसकी पत्नी नंदिनी ने बचपन में गोद लिया होता है और यश राहुल को पढ़ने के लिए विदेश भेज देता है। अपनी पढ़ाई पूरी करके जब राहुल घर लौटता है तो उसके पिता उसकी शादी अपने दोस्त की बेटी नैना से करना चाहते हैं। राहुल अपने पिता की मर्ज़ी के खिलाफ अंजलि से विवाह कर लेता है। गुस्से में आकर यश राहुल को अपनी जिंदगी से निकल देता है। तत्पश्चात भारतीय संस्कारों से जुड़े होने के कारण यशवर्धन राहुल और अंजलि को पुनः स्वीकार कर लेता है। फिल्म भारतीयता का बोध कराती है।

राकेश रोशन द्वारा निर्देशित फिल्म 'कहो न प्यार है' वर्ष 2000 की कहानी सोनिया और रोहित की है। सोनिया सक्सेना एक बहुत अमीर व्यवसायी की बेटी है जो एक ग़रीब लड़के रोहित से मिलती है और उसकी आवाज़ की कायल हो जाती है। इसमें इसमें भारतीय रहन-सहन और भारतीय परिवेश को दिखाया गया है।

सुभाष घई द्वारा निर्देशित फिल्म 'परदेस' वर्ष 1997 में अमेरिका का चित्रण किया है। अपने मूल देश से बाहर रह रहे भारतीय प्रवासियों में भारतीयता, संस्कृति, रहन-सहन, रीति-रिवाज तथा धार्मिक अस्मिता का प्रतीक है या नहीं इसकी तुलनात्मक प्रस्तुति है। फिल्म भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को बखूबी रेखांकित किया गया है। फिल्म में परदेस के रूप में अमेरिका का विवेच्य यानि पश्चिमी देशों के समाजिक-सांस्कृतिक वातावरण को दिखाते हुये वहाँ के सांस्कृतिक मूल्यों को बहुत ही सारगर्भित ढंग से विश्लेषित करता है। भारत देश में पूजा-पाठ, लोगों में आदर-संस्कार तथा अपने मूल देश के विभिन्न तत्त्वों जैसे रीति-रिवाज, खान-पान पर गर्व किया जाता है। लोग परिश्रम को ज्यादा महत्व देते हैं। बड़े छोटों का तथा छोटे बड़ों का बहुत सम्मान करते हैं। फिल्म में परदेस शब्द की सार्थकता फिल्मांकन की विषयवस्तु से परिलक्षित होता है। फिल्म अपने नाम परदेस को सांस्कृतिक-सामाजिक रूप को बखूबी चित्रित करती है। फिल्म अपने मूल संदेश को लोगों के बीच रख पाने में बखूबी सक्षम है।

Year-6 Volume: II, April-June, 2024 Issue-22 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

आशुतोष गोवरिकर द्वारा निर्देशित फिल्म 'स्वदेस' (2004) देशज अर्थात भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक समृद्धता तथा रिश्ते-नातों को रेखांकित करती है। प्रवासी फिल्म 'स्वदेस' में दो तरह के समाज को एक साथ दिखाया गया है जिसमें एक प्रवासी भारतीय समाज है जो विदेश को छोड़ स्वदेश आना नहीं चाहता लेकिन कहीं न कहीं देशज भावना अपनी ओर उसे आकर्षित करती है तो दूसरा अपना रूढ़िवादी समाज जो आज भी वही वर्षों पुराने विचारों का है जिसमें ऊंच-नीच, जाति, रंग-भेद, लड़के-लड़कियों में भेद करना चाहता है को दृश्यांकित किया गया है। स्वदेश के माध्यम से अपनी देश के विभिन्न पहलुओं को भी दिखाने का प्रयास किया है जिसके कारण एक ओर लोग भारत को महानता की श्रेणी में भी रखते हैं। फिल्म दोनों स्थानों के सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याओं को उद्धृत कर पाने में सफल होती है। डायस्पोरिक प्रसंगों तथा देशज तत्वों के उद्देश्यों को बखूबी कहने का प्रयास करती है।

करण जौहर द्वारा निर्देशित फिल्म 'कभी अलविदा न कहना'(2006) में वैवाहिक संबंधों सात फेरों और संस्कारों को न मानना अमेरिका के भारतीय प्रवासियों में मूल देश की धार्मिक अस्मिताओं को न जान पाना उसकी सांस्कृतिक प्रवृत्ति को बताता है। डायस्पोरिक समुदाय द्वारा खान-पान के अंतर्गत शराब, सिगरेट को दिखाया गया है। फिल्म के पात्र, चरित्र और परिवेश अमेरिकी देश को बहुत ही रोचक ढंग से प्रस्तुत करते हैं। जीवन मूल्यों के संदर्भ में यूरोपीय जीवन मूल्य अमेरिकी जीवन मूल्यों से अधिक नैतिकतावादी और परंपरावादी हैं जबकि अमेरिकी जीवन शैली में नैतिकता और परंपराओं का महत्व नहीं के बराबर है। फिल्म विदेशों में बसे भारतीय मूल के लोगों की समस्याओं का प्रकटन करती है।

निष्कर्ष

हिंदी डायस्पोरिक सिनेमा, यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाकर, अप्रवासी भारतीयों के जीवन की जटिलताओं को उजागर करता है। यह सिनेमा, अकेलेपन, भय, टूटते परिवारों, रिश्तों की वास्तविकता और उनकी जटिलताओं, नैतिकता, समानता और विश्वास जैसे मुद्दों को संबोधित करता है। सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों के संदर्भ में, भारतीय डायस्पोरा का युवा वर्ग सबसे अधिक प्रभावित हुआ है। यह युवा वर्ग, एक ओर अपने माता-पिता से भारतीय संस्कारों को ग्रहण करता है, वहीं दूसरी ओर अपने विदेशी परिवेश का भी अनुभव करता है। यह द्वंद्व, अक्सर हिंदी डायस्पोरिक सिनेमा में चित्रित होता है।

सिनेमा के वैश्विक विस्तार ने, फिल्म निर्माताओं और दर्शकों, दोनों को ही प्रभावित किया है। जब सिनेमा का सामाजिक सरोकार वैश्विक स्तर पर स्पष्ट हुआ, तब डायस्पोरा समुदायों का जीवन भी सिनेमा का प्रमुख विषय बन गया। डायस्पोरिक सिनेमा, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फैले हुए प्रवासी समुदायों के जीवन से जुड़े विषयों को केंद्रित करता है। इसमें, पूंजी और श्रम बाजार के अंतर्राष्ट्रीयकरण से जुड़ी आर्थिक नीतियां, जातीय संघर्ष, गृहयुद्ध, पर्यावरणीय समस्याएं, मानवाधिकार, राजनीतिक उथल-पुथल, वर्ग संघर्ष आदि विषयों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया जाता है। हिंदी डायस्पोरिक सिनेमा, न

The Asian Thinker

Year-6 Volume: II, April-June, 2024 Issue-22 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संदर्भ

डॉ. राय, रिन्जु.(2023). *हिंदी डायस्पोरिक सिनेमा और भारतीय डायस्पोरा*. दिल्ली: युनिवर्सिटी पब्लिकेशन

डॉ. नगेंद्र, *मानविकी पारिभाषिक कोश: साहित्य खंड*. पृष्ठ-89. Retieved on 20/07/2018 from http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/112131/7/07_chapter%202.pdf

दास, विनोद .(2003). *भारतीय सिनेमा का अन्तःकरण*. दिल्ली: मेधा बुक्स प्रकाशन. पृष्ठ. 7

दुबे, अभय. (2013). *समाज विज्ञान विश्वकोश*. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन. पृष्ठ 620-21. Retrieved on 12/11/2018 from www.hindisamay.com

Oxford Reference. *Diasporic cinema (intercultural cinema)* retrieved on 05/01/2022 from http://www.oxfordreference.com/view/10.1093/acref/9780199587261.001.0001/acref-9780199587261-e-0191

Pulkit Datta (2008). *Bollywoodizing Diasporas: Reconnecting to the NRI through Popular Hindi Cinema*. Miami University Oxford, Ohio pp. 22

जयवरदेना, सी. (1980). *कल्चर एंड एथनिसिटी इन गयाना एंड फिजी.मैन* (एन. एस.), p.430-31

जोशी, अनिल .(2008). *प्रवासी लेखन : नई जमीन, नया आसमान*. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन. पृष्ठ-68

जोशी, रामशरण, राय, राजीव रंजन और अन्य.(2014). *डायस्पोरा के विविध आयाम*. नई दिल्ली : राज कमल प्रकाशन . पृष्ठ.29-30

अग्रवाल, प्रहलाद.(2012).वसुधा-81 अंक-1 पृष्ठ 249

Suzirath,S. (Researcher). (2009). *Diasporic Chronotope in Women's Fiction: A Select Study*. Dr. H. Kalpak (Supervisor). Department of English, Pondicherry: Pondicherry University.p.viii-x

***